प्रश्न – बिहारीलाल की काव्यकला का चित्रण करें।

उत्तर – बिहारीलाल शृंगार रस के रससिद्ध कवि हैं। इनकी एकमात्र कृति 'बिहारी सतसई' है। मुक्तक शैली में रचित इस कृति में वे सभी गुण विद्यमान हैं जो सफल मुक्तक काव्य के लिए आवश्य माने गए हैं। इन्होंने दोहे जैसे छोटे छन्द में इतने अधिक भावों का समावेश किया है कि आलोचकों को उनके विषय में कहना पड़ा है – "बिहारी ने गागर में सागर" भर दिया है। इसीलिए 'बिहारी सतसई" के विषय में यह उक्ति कही जाती है –

"सतसइया के दोहरे ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगैं घाव करैं गंभीर॥"

बिहारी की काव्यगत विशेषताओं का उद्घाटन निम्नलिखित शीर्षकों के माध्यम से किया जा सकता है –

① भाषा की समास शक्ति – कम से कम शब्दों के माध्यम से अधिक से अधिक भाव व्यक्त करने के लिए भाषा की समास शक्ति का प्रयोग किया जाता है। इसमें बिहारीलाल को पूर्ण सफलता मिली है। वासन्ती पवन का चित्रण उसकी समस्त विशेषताओं के साथ बिहारी ने हाथी के सांगरूपक के निम्न दोहे में किया है –

~~ध्वनि रूपी~~ ध्वन्यावली को बजाता हुआ मकरन्द रूपी ~~भ्रमर रूपी~~ मद को गिराता हुआ कुंज समीर रूपी कुंजर (हाथी) मन्द-मन्द चला आ रहा है। वासन्ती पवन की तीनों विशेषताएं शीतल, मंद, सुगन्ध यहाँ दिखलायी गयी है।

② कल्पना की समाहार शक्ति – बिहारीलाल में

दूर की सूझ को कल्पना के बल पर अपने दोहों में साकार करने की यह शक्ति बिरले कवियों में दिखायी पड़ती है। इसी से उनके काव्य में सरसता, मधुरता एवं चमत्कार आ गया है। प्रेमी प्रेमिका के परस्पर नैनों का मिलना, उसमें प्रेम भाव उत्पन्न होना और प्रेमभाव उत्पन्न होने के कारण प्रेमी प्रेमिका में आपस में प्रीति उत्पन्न होती है किन्तु परिवार के अन्य सदस्यों से नाता टूट जाता है, यह पूरी घटना न जाने कितने समय में घटित हुई होगी। किन्तु कवि ने अपनी कल्पना की समाहार शक्ति के माध्यम से पूरी घटना को एक ही दोहे में वर्णित कर दिया है। —

दृग उरुझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।
परत गाँठ दुरजन हिये, दई नई यह रीति।

(3) चमत्कार प्रदर्शन — बिहारी ने अपने काव्य में भिन्न भिन्न दोहों के माध्यम से चमत्कार प्रदर्शन किया है। उन्होंने भिन्न-भिन्न प्रकार के अलंकारों का प्रयोग किया है। यमक अलंकार का एक उदाहरण देखा जा सकता है —

"कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
उहि खाएँ बौराय नर इहिं पाएँ बौराय॥"

(4) बहुज्ञता का प्रदर्शन — बिहारीलाल को ज्योतिष, नीति, गणित, आयुर्वेद, इतिहास-पुराण आदि का ज्ञान था। इनके दोहों में इन सारे विषयों की जानकारी मिलती है। आज दुनियां में बुरों को पूजा जाता है और भले व्यक्तियों का तिरस्कार किया जाता है —

"बसै बुराई जासु तन ताही को सनमानु।
भले भलो कहि छोड़िए खोटे ग्रह जप दानु॥"

(5). श्रृंगार रस की प्रधानता – 'बिहारी सतसई' में संयोग एवं वियोग दोनों श्रृंगार का भरपूर वर्णन किया गया है। राधा कृष्ण की चेष्टाओं, वाक्य विनोद एवं उनमें चलने वाले परिहास का सुन्दर चित्रण निम्नलिखित दोहे के माध्यम से देखा जा सकता है —(संयोगश्रृंगार)

"बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहनु हँसै देन कहै नटि जाय॥"

(6) प्रकृति चित्रण – बिहारी लाल ने प्रकृति चित्रण बहुत मार्मिक तरीके से किया है। ग्रीष्म ऋतु की प्रचण्डता से व्याकुल होकर सर्प और मोर, हिरन और बाघ एक स्थान पर बैठे हैं, लगता है अतिशय गर्मी ने संसार को तपोवन के समान राग द्वेष से रहित कर दिया है। जैसे —

"कहलाने एकत बसत अहि, मयूर, मृग बाघ।
जगत तपोवन सौ कियौ दीरघ दाघ निदाघ॥"

(7) व्यंजना सौन्दर्य – बिहारीलाल के अनेक दोहों में अन्योक्ति एवं व्यंजना का संयोग दिखायी पड़ता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित दोहे को लिया जा सकता है जिसमें भौंरे और कली के माध्यम से राजा जयसिंह और उनकी नयी रानी पर व्यंग्य किया गया है —

"नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सौं बिंध्यौ आगे कौन हवाल॥"

(8) विरह ताप की अतिशयता – बिहारी ने नायिका के विरहताप का वर्णन करते हुए लिखा है कि विरहताप से नायिका इतनी जल रही है कि गुलाब जल उसके शरीर का स्पर्श भी नहीं कर पाता और बीच में ही भाप बनकर उड़

जाता है—
"औंधाई सीसी सुलखि बिरह बरनि बिललात।
बिच ही सूखि गुलाबु गौ छीटौं छुई न गात।।"
(१) हाव-अनुभाव का चित्रण – नायिका की श्रृंगारिक चेष्टाएँ, जो जान बूझकर की जाती हैं, हाव कहलाती हैं। 'विलास' नामक हाव का चित्रण निम्नलिखित दोहे में देखा जा सकता है—
"भौंह ऊँचै आँचर उलटि मोरि मोरि मुंह मोरि।
नीठि-नीठि भीतर गई डीठि-डीठि सौं जोरि।।"
नायिका बड़ी चतुराई से भौंहें ऊँची कर आँचल को उलटकर तथा मुख मोड़कर बड़े प्रेम से नायक की दृष्टि से अपनी दृष्टि मिलाकर भीतर चली गयी।
सारतः कहा जा सकता है कि बिहारी उच्च कोटि के सफल मुक्तकार एवं श्रृंगार रस के रस सिद्ध कवि हैं। बिहारी के काव्य में भाव पक्ष एवं कला पक्ष का संतुलित समन्वय दिखलायी पड़ता है। अनुप्रास, यमक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास, उपमा, रूपक, विभावना आदि सभी अलंकार इनके दोहों में उपलब्ध हैं। इसी कारण बिहारी को रीतिकाल का सर्वाधिक लोकप्रिय कवि माना जाता है।